16 दिसंबर 2015 को संसदीय अध्ययन तथा प्रशिक्षण ब्यूरो में उत्तर–पूर्व राज्यों की विधान सभाओं के लिए प्रत्यायित मीडियाकर्मियों के लिए संसदीय पद्धतियों और प्रक्रियाओं के बारे में आयोजित परिचय कार्यक्रम के शुभारम्भ के अवसर पर माननीय अध्यक्ष का भाषण

1. उत्तर पूर्व क्षेत्र की विधान सभाओं की कार्यवाही को कवर करने वाले मीडियाकर्मियों के लाभार्थ संसदीय अध्ययन तथा प्रशिक्षण ब्यूरो द्वारा संसदीय पद्धतियों और प्रक्रियाओं के बारे में आयोजित किये जा रहे परिचय कार्यक्रम के शुभारम्भ के अवसर पर आपके बीच आकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। मुझे विश्वास है कि इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में आपको Parliamentary Practices and Procedures की बारीकियों का पता चलेगा। आप सब इस बात से सहमत होंगे कि इनको समझने के बाद ख़बरों के प्रति आपका नज़रिया नया होगा।

2. किसी भी सक्रिय लोकतंत्र में संसद और प्रेस दो ऐसे स्तंभ हैं जिन्हें लोगों के हितों से जुड़े मुद्दे उठाने की पावन जिम्मेदारी सौंपी गई है। हमारे संविधान के अंतर्गत प्राप्त एक मूल अधिकार, अर्थात् अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, जिसके आधार पर एक स्वतंत्र प्रेस हमारी व्यवस्था का अभिन्न अंग है। लिखित शब्द के प्रभाव को कम करके नहीं आंका जा सकता। इसलिए एक जागरूक समाज के निर्माण में हमेशा से मीडिया की भूमिका का बहुत महत्व है।

3. प्रेस की स्वतंत्रता और वाक् स्वतंत्रता सभी लोकतांत्रिक संस्थाओं का मूल आधार है। स्वतंत्रता निर्बाध नहीं होती और इसके साथ कुछ जिम्मेदारियां और दायित्व भी जुड़े हैं। संसदीय लोकतंत्र में प्रेस संसद और जनता के बीच सेतु का कार्य करती है। मीडिया द्वारा ही आम जनता को संसद में हुए कार्य के बारे में पता

चलता है और इस प्रकार उन्हें दोनों सभाओं में हुई कार्यवाही के बारे में जानकारी रहती है। वास्तव में प्रेस जानकारी हासिल करने में संसद की भी सहायता करती है जिससे कार्यपालिका को लोगों के प्रति जवाबदेह रखने में मदद मिलती है। लोकतंत्र की संपूर्ण सफलता सुनिश्चित करने के लिए मीडिया और विधानमंडलों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

4. एक सांसद और एक पत्रकार दोनों का काम वास्तव में एक जैसा ही है। वह है आम आदमी के सरोकारों को सामने लाना। लोकतंत्र में सांसदों और पत्रकारों की भूमिका एक दूसरे के पूरक की होती है। मीडिया व्यवस्था की कमियों को उजागर करता है ताकि अधिकारियों का ध्यान उस ओर दिलाया जा सके। जबकि सांसदों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे जनता के मुद्दों को उठाएं और सरकार से इनका जवाब मांगें। दोनों ही मामलों में हमारा मार्गदर्शी सिद्धांत केवल जनहित ही होना चाहिए। जो सांसद/विधायक सदन में पूर्ण जानकारी के साथ प्रक्रिया का पालन करते हुए अपनी बात रखते हैं, उनकी बातों को अखबारों में जगह मिलनी चाहिए। परंतु होता यह है कि बेवजह की बयानबाजियां/प्रचार के लिए हथकंडों का प्रयोग करने वाले सम्मानित जन सुर्खियों में आ जाते हैं। आप मीडियाकर्मी इस पर समुचित निर्णय ले सकते हैं। जो सदस्य अपने प्रबुद्ध विचारों से वाद–विवाद का स्तर ऊपर उठाते हैं, उनके योगदान को मान्यता दी जानी चाहिए। मीडिया की व्यापक भूमिका के जरिए ही जनता को सभा में एक सदस्य के योगदान के बारे में पता चलता है। संसद व विधानमंडलों में वाद–विवाद, विचार–विमर्श, सहमति–असहमति अनिवार्य प्रक्रिया है और नियमों के तहत इसकी अनुमति भी है। परंतु सभा में व्यवधान और अनावश्यक हंगामा करने से किसी भी समस्या का कोई समाधान नहीं होता है।

5. इस संदर्भ में, मेरा मानना है कि सभा में एक सदस्य के प्रतिनिधित्व के चार प्रमुख पहलू होते हैं। पहला, वह स्वयं का प्रतिनिधित्व करता है। दूसरा, वह उस निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है जिसने उसे सभा में भेजा है। तीसरे, वह उस राजनीतिक दल का प्रतिनिधित्व करता है जिसके चुनाव चिह्न और घोषणा पत्र से वह चुनाव लड़ता है। अंततः, वह राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करता है क्योंकि वह उस संविधान को कायम रखने की शपथ लेता है जो हमारी राष्ट्रीय एकता और अखंडता का स्पष्ट प्रतीक है। ऐसे कई अवसर आ सकते हैं, जब इन चारों पहलुओं को एक–दूसरे का सामना करना पड़ता है।

6. समूचा देश संसद से मार्गदर्शन की अपेक्षा रखता है। जबकि फोकस केवल प्रश्नकाल और शून्यकाल पर ही केन्द्रित रहता है। इसके साथ ही, सभा में विधायी कार्य तथा कई अन्य महत्वपूर्ण मामले चर्चा हेतु उठाए जाते हैं। सवा सौ करोड़ लोगों की आबादी के प्रति हम सभी सामूहिक रूप से जिम्मेदार हैं। उनके मूलभूत मुद्दों को पूर्ण करने की जिम्मेदारी से बड़ी कोई जिम्मेदारी नहीं है। लोकतंत्र में मीडिया चौथा स्तम्भ माना जाता है। इन चार स्तम्भों के ऊपर ही पूरे लोकतंत्र की इमारत टिकी हुई है।

7. विधानमंडलों द्वारा किए गए सकारात्मक कार्यों को भी रिपोर्टिंग का विषय माना जाना चाहिए। सराहना पाने से कुशलता में वृद्धि होती है। किसी सदस्य के सकारात्मक योगदान की सराहना दूसरे सदस्यों के लिए प्रेरणादायी होती है। मीडिया के माध्यम से संसद की कार्यवाही की पूरी जानकारी लोगों को मिल जाती है। अतः, एक जागरूक समाज के निर्माण में संसद या विधानसभाओं के कार्यों पर मीडिया द्वारा की गई रिपोर्टिंग का बहुत महत्व है।

8. यह कार्यक्रम हमारी संवैधानिक संस्थाओं और इन संस्थाओं के सशक्तिकरण और उन्हें बढ़ावा देने में मीडिया की भूमिका के बारे में सही समझ पैदा करने हेतु हमारी व्यवस्था से आपको पूरी तरह परिचित कराने के लिए तैयार किया गया है। इन तीन दिनों के दौरान संसद के वरिष्ठ सदस्य आप से बातचीत करेंगे। वस्तुतः इस कार्यक्रम का आयोजन सत्र के दौरान किया गया है ताकि, आप पूर्ण रूप से संसद के कार्यों को देख सकें। मुझे आशा है कि आप इस कार्यक्रम से लाभान्वित होंगे और संवैधानिक संस्थाओं और उनकी गरिमा बनाए रखने में मीडिया की भूमिका के बारे में बेहतर जानकारी के साथ वापस जाएंगे।

9. नया वर्ष आने वाला है। त्यौहारों का समय नजदीक आ रहा है। इस अवसर पर मैं आपको क्रिसमस और नव वर्ष की अग्रिम बधाई देती हूं।

Merry Christmas.